**14/05/2020**

# General Psychology

Paper I

B.A. I (Honours & Subsidiary)

## Define Perception. Discuss its Characteristics.

## प्रत्यक्षण की परिभाषा दें। इसकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।

प्रत्यक्षण एक महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रिया (mental process) है जिसके माध्यम से हमें उपस्थित उद्दीपनों का तात्कालिक ज्ञान होता है। अतः प्रत्यक्षण में वस्तु या उद्दीपन का एक अर्थपूर्ण ज्ञान होता है। जब कोई उद्दीपन व्यक्ति की ज्ञानेन्द्रिय को प्रभावित करता है तो उससे तंत्रिका-आवेग उत्पन्न हो कर सुषुम्ना एवं मष्तिष्क तक पहुँचता है जिसके फलस्वरूप हमें उस वस्तु का अर्थपूर्ण ज्ञान होता है। भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षण को यद्यपि की भिन्न ढंग से परिभाषित किया है, फिर भी उनकी परिभाषाओं में काफी सर्वनिष्ठता (communality) है।

**Coleman के अनुसार- "प्रत्यक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव को अपने आंतरिक अंगों तथा अपने वातावरण के बारे में सूचना मिलती है।"**

**Baron के अनुसार- " प्रत्यक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम लोग संवेदी निवेशों का अपने इर्द गिर्द की वस्तुओं के बारे में जानने के लिए चयन करते हैं, संगठित करते हैं तथा व्यव्हार करते हैं।"**

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हम निम्नांकित तथ्य पर पहुँचते हैं-

1) प्रत्यक्षण एक मानसिक प्रक्रिया है।

2) प्रत्यक्षण द्वारा उपस्थित उद्दीपन का अर्थार्थ इर्द गिर्द की वस्तुओं का अर्थपूर्ण ज्ञान होता है।
3) प्रत्यक्षण एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है।
4) प्रत्यक्षण के लिए ज्ञानेन्द्रियों का उत्तेजित होना अनिवार्य है।
5) ऐसे तो प्रत्यक्षण से उद्दीपन का सही ज्ञान ही होता है परन्तु कभी-कभी अल्प समय के लिए प्रत्यक्षण से उपस्थित वस्तुओं का कुछ विशेष परिस्थिति में गलत ज्ञान भी होता है। और तब ऐसे प्रत्यक्षण को भ्रम (illusion) की संज्ञा दी जाती है।

## प्रत्यक्षण की विशेषताएं (Characteristics of Perception)-

प्रत्यक्षण एक ऐसी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसकी अपनी कुछ विशेषताएं हैं। इन विशेषताओं में निम्नांकित प्रमुख हैं।

### 1) प्रत्यक्षण एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है (perception is a selective mental process)-

मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षण को एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया कहा है जिससे उनका तात्पर्य यह है की किसी उद्दीपन का प्रत्यक्षण करते समय व्यक्ति का मस्तिष्क काफी सक्रिय हो कर उस उद्दीपन की व्याख्या करता है। जैसे- यदि हम सेब का प्रत्यक्षण करते हैं, तो सिर्फ उसे हम सेब के रूप में नहीं देखते हैं बल्कि उसके विशेष गुण अर्थार्थ खट्टा या मीठा होने का भी अंदाज़ लगा लेते हैं और उसी के अनुरूप व्याख्या करते हैं। ऐसा इस लिए होता है की प्रत्यक्षण करते समय व्यक्ति के मष्तिष्क की सक्रियता का स्तर काफी बढ़ा होता है।

### 2) प्रत्यक्षण में संगठन होता है (perception involves organisation)-

प्रत्यक्षण में संगठन का तत्त्व भी सम्मिलित होता है। इस तत्त्व पर गेस्टलटवादियों द्वारा सबसे अधिक बल डाला गया। इन लोगों का मत है की जब भी हम किसी उद्दीपन का प्रत्यक्षण करते हैं हो उसके सभी तत्वों को बिखरे हुए नहीं देखते हैं बल्कि एक साथ संगठित देखते हैं। जैसे- यदि हम किसी व्यक्ति के चेहरे पर देखते हैं तो उसकी आँख, नाक, कान, भौं, गाल सभी का

प्रत्यक्षण हम अलग-अलग नहीं करते हैं बल्कि उन्हें समन्वित कर देखते हैं जिससे हमें उस व्यक्ति के चेहरे का स्पष्ट प्रत्यक्षण होता है।

3) **<u>प्रत्यक्षण एक चयनात्मक प्रक्रिया है (perception is a selective process)-</u>**

प्रत्यक्षण की एक अन्य विशेषता यह है की इसका स्वरुप चयनात्मक (selective) होता है। यदि हम ध्यान दें तो यह स्पष्ट होगा की हर पल व्यक्ति अलग प्रकार के उद्दीपनों से घिरा रहता है। परन्तु वह उनमें से कुछ ही उद्दीपनों का प्रत्यक्षण कर पाता है। साम्यतः अनेक उद्दीपनों में से व्यक्ति सिर्फ उन उद्दीपनों का प्रत्यक्षण करता है जो उसकी अभिरुचि तथा प्रेरणा के अनुरूप होते हैं या फिर उद्दीपन-विशेष में ही कुछ ऐसे गुण होते हैं जिनके कारण व्यक्ति उनका प्रत्यक्षण अन्य उद्दीपनों की तुलना में आसानी से कर लेता है।

4) **<u>प्रत्यक्षण में आकृति एवं पृष्टभूमि का कारक भी सम्मिलित होता है (perception involves the factors of figure and background)-</u>**

प्रत्यक्षण में आकृति एवं पृष्टभूमि का कारक सम्मिलित होता है। जब व्यक्ति किसी उद्दीपन का प्रत्यक्षण करता है तो उसे एक निश्चित एवं स्पष्ट फॉर्म के रूप में किसी अस्पष्ट प्रारूप पर देखता है। निश्चित एवं स्पष्ट फॉर्म को आकृति (figure) तथा अस्पष्ट प्रारूप को पृष्टभूमि (background) कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों का मत है की आकृति तथा पृष्टभूमि का स्वरुप स्थिर न हो कर गत्यात्मक (dynamic) होता है जिसमें आकृति कभी पृष्टभूमि में चली जाती है तो पृष्भूमि कभी आकृति में चली जाती है।

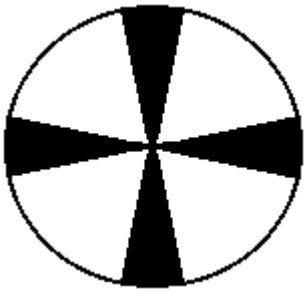

जैसे- यदि हम चित्र में  रुबिन क्रॉस को ध्यान से देखते हैं तो यह पता चलता है की कभी उजला क्रॉस अस्पष्ट हो कर (पृष्टभूमि) आँखों से ओझल हो जाता है और काले क्रॉस को हम आकृति के रूप में देखते हैं तो कभी उजले क्रॉस को हम आकृति के रूप में देखते हैं और काला भाग आँखों से ओझल हो जाता है।

5) **<u>प्रत्यक्षण में स्थिरता का भी गुण होता है (perception also involves contancy)-</u>**

सामान्यतः उद्दीपन व्यक्ति की ज्ञानेन्द्रियों को भिन्न-भिन्न ढंग से प्रभावित करता है। जैसे- यदि हम किसी आदमी को दस फ़ीट की दूरी से देखें तथा फिर बीस फ़ीट की दूरी से देखें तो ऐसी परिस्थिति में retina पर जो प्रतिबिम्ब बनता है वह दो आकार का होता है। पहला प्रतिबिम्ब दूसरे प्रतिबिम्ब से बड़ा होता है। ऐसी परिस्थिति में उस आदमी का प्रत्यक्षण इन दोनों में भिन्न-भिन्न होना चाहिए था। परन्तु ऐसा नहीं होता है, क्यूंकि प्रत्यक्षण में स्थिरता का गुण होता है। इस गुण के कारण हम वस्तुओं या उद्दीपनों का प्रत्यक्षण भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में एक ही ढंग से करते हैं।

स्पष्ट हुआ की प्रत्यक्षण की कुछ अपनी विशेषताएं होती हैं जिसके कारण इसका स्वरुप अन्य संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं से थोड़ा भिन्न है।

**(...to be continued)**

**Dr. Hena Hussain**

Assistant Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com